केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

कुल प्राप्तांक शब्दों में | कुल प्राप्तांक अंकों में

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

7746882091

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
श्रीमती दीपिका वर्मा 014437	श्रीमती किरण विश्वकर्मा 010186

योग पूर्व पृष्ठ 5 + पृष्ठ 2 के अंक — = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 01

प्रश्न क्र. 01 का उत्तर

(i) निशा निमंत्रण ।

(ii) कैमरे में बंद अपाहिज,

(iii) आठ ।

(iv) भी,

(v) नीले शंख जैसा,

(vi) संस्मरण

प्रश्न क्र. 02 का उत्तर

(i) ब्रज ।

(ii) अखबार की,

③ [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक   कुल अंक

प्रश्न क्र.

(iii) पतंग ।

(iv) स्मृति की रेखाएँ ।

(v) आलम्बन ।

(vi) आनन्द रतन यादव ।

प्रश्न क्र. 03 का उत्तर

(i) सत्य ।

(ii) सत्य ।

(iii) असत्य ।

(iv) सत्य ।

(v) असत्य ।

④ + =

पृष्ठ अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

(vi) सत्य ।

प्रश्न क्रं. 04 का उत्तर

(अ)		(ब)
(i) जिठौत	-	जेठ का पुत्र
(ii) बिम्ब	-	शब्द चित्र
(iii) जूझ	-	केशव प्रथम वी
(iv) अतीत मे दबे पाँव	-	यात्रा वृतांत
(v) फ्रीलांसर पत्रकार	-	अलग - अलग अखबारों मे लेखन
(vi) समाचार लेखन की शैली	-	उल्टा पिरामिड
(vii) कॉलेज आॅफ प्रीस्ट्स	-	धार्मिक अनुष्ठान का स्थान

के अंक

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 05 का उत्तर

(i) समाचार लेखन के छः ककार निम्न है –
कब, कहां, कैसे, क्यों, किस लिए, किससे।

(ii) गद्य की प्रमुख चार विधाएं – निम्न है,
1) कहानी 2) उपन्यास 3) नाटक 4) एकांकी 5) निबंध।

(iii) रघुवीर सहाय दूसरे तार सप्तक के कवि है।

(iv) सिन्धु सभ्यता की इटों की बनावट का अनुपात आयताकार थी।

(v) शब्द शक्ति – शब्द में अन्तरनिहित अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को 'शब्द शक्ति' कहते है।

या

शब्द और अर्थ के साक्षात सम्बन्ध को ~~शब्~~ 'शब्द शक्ति' कहते है।

6 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 6 क अंक कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

(vi) 'आम के आम गुठलियों के दाम' मुहावरे का अर्थ है - 'दोहरा लाभ'।

(vii) दुर्मिल सवैया छंद का दूसरा नाम 'चन्द्रकला सपया' है।

प्रश्न क्र० 06 का उत्तर

'छोटा मेरा खेत' कविता के सन्दर्भ मे 'अंधड़' से आशय यह है कि कल्पनाओं का उमड़ कर आना या विचारो का, भावो का आँधी के रूप में दिलों मे आना।

'छोटा मेरा खेत' कविता के सन्दर्भ मे 'बीज' से आशय यह है कि यह कल्पनारूपी विचार, भावनाएं है। जो कवि ने कागज के पन्ने या खेत मे बोई है।

B
S
E

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 07 का उत्तर (अथवा)

छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भ -

कवि का नाम		रचनाएँ
i) जयशंकर प्रसाद	-	कामायनी, आँसू, झरना,
ii) महादेवी वर्मा	-	दीपशिखा, परिक्रमा, यामा,
iii) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	-	गीतिका, परिमल, अनामिका,
iv) सुमित्रानन्दन पंत	-	पल्लव, वीणा, बूढ़ा चाँद

प्रश्न क्र. 08 का उत्तर

सेवक धर्म में भक्तिन की तुलना हनुमान जी से इसलिए की गई है क्योकि वह लेखिका के लिए सब कुछ करने के लिए हमेशा तैयार रहती। लेखिका की आवश्यकता

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

के अनुसार काम किया करती, जब लेखिका रात्रि के समय अपना काम करती तब भी वह लेखिका के संग जागती, यदि लेखिका को चित्रकारी करते समय रंगो की कटोरी धोने के लिए उठना पड़ता तो वे स्वयं अपने स्थान से उठकर यह काम करती, लेखिका को भूख का एहसास न हो वह तुलसी वाली चाय बनाकर उन्हे पिलाती। वे लेखिका को यात्रा के समय भी अकेला नहीं छोड़ती। बदरी केदार जैसे तंग ऊँचे पहाड़ो मे वे आगे चलती की लेखिका को कष्ट न हो, गाँव की पगडंडी मे वे पीछे चलती ताकि धूल से लेखिका बचे।

इस प्रकार से भक्तिन सेवकधर्म मे हनुमान जी के समान है।

9 + पृष्ठ 9 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 09 का उत्तर

	नाटक	एकांकी
(i)	नाटक में अनेक अंक होते है।	एकांकी में एक अंक होता है।
(ii)	नाटक मे पात्रों की संख्या अधिक होती है।	एकांकी मे पात्रों की संख्या सीमित होती है।
(iii)	जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया नाटक है - स्कन्दगुप्त चन्द्रगुप्त, अजातशत्रु आदि।	जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखी गई एकांकी है - एक घूँट

B S E

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर [अथवा]

मुअनजो-दड़ो को देखते-देखते लेखक को राजस्थान की याद आ गई। क्योंकि मुअनजो-दड़ो और राजस्थान की रेत एक जैसी थी। वहां पर भी शान्त वातावरण और हवाएं थी, जैसी राजस्थान में शान्त वातावरण एवं हवाएं थी।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

कवित्त छंद → यह एक वर्णिक छन्द है। जिसमे प्रत्येक चरण मे 16 - 15 की यति से कुल 31 वर्ण होते है। और इस छन्द का अन्तिम वर्ण गुरु (ऽ) होता है। इसे मनहरण छन्द भी कहते है।

उदाहरण → रैन दिन आठो याम राम राम राम राम।
सीताराम सीताराम सीताराम कहियै ॥

प्रश्न क्र. 12 का उत्तर (अथवा)

रुबाइयाँ → यह उर्दू और फारसी की छंद शैली है। जो कि चार पंक्तियों की होती है। इसमे पहले, दूसरे और चौथे पंक्ति मे तुक (काफिया) होता है। तीसरी पंक्ति स्वछन्द होती है। इसे रुबाइयाँ कहते है।

(11) [ ] + [ ] = [ ]

बाएं मूल पृष्ठ पृष्ठ मूल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

उदाहरण → आँगन मे ठुनक रहा है जिदलाया है।
बालक तो हई चाँद पर ललचाया है।
दर्पण (आईना) देकर कह रही है माँ।
देख आईने मे चाँद उत्तर आया है।

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर

(i) महादेवी वर्मा विदुषी महिला थी।

(ii) श्री कृष्ण के अनेक नाम है।

प्रश्न क्र. 14 का उत्तर

फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज → ब्रेकिंग न्यूज से आशय है यह है कि आज की ताजा खबर। अर्थात जो आज घटना घटी है उसके बारे मे जनता को बताना।

जैसे - ब्रैकिंग न्यूज - आज बारवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा मे 80 हजार बच्चे बैठे है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर

	राष्ट्रभाषा	राजभाषा
(i)	इस भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है।	इस भाषा का क्षेत्र मातृभाषा से अधिक होता है।
(ii)	इसे 'सम्पर्क भाषा' भी कहते है।	इसे 'सरकारी कामकाज' की भाषा भी कहते है।
(iii)	हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है।	मध्यप्रदेश की हिन्दी, गुजरात की गुजराती आदि इनकी राजभाषा है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर [अथवा]

जीवन परिचय

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

जन्म - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी का जन्म 1899 में हुआ।

(i) दो रचनाएँ - गीतिका, अनामिका, कुकुरमुत्ता, नए पत्ते, राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, परिमल आदि।

(ii) भाव पक्ष - त्रिपाठी निराला जी ने अपने काव्यों को सुन्दर ~~बनाव~~ बनाने के लिए ~~सरल~~ सरल-सहज भाषा का उपयोग किया है। इन्होंने प्रकृति की सुन्दरता पर रचनाएँ लिखी है। इनके काव्यों मे रस, छन्द, अलंकार आदि का सुन्दर चित्रण है। इन्होंने जीवन के सुख, दुख, दीन-दुखियों के द्वारा सताए गए लोगो के लिए करुणामय रचनाएँ लिखी है। इनकी काव्यों को पढ़ कर आसानी से समझा जा सकता है।

B S E

+ =

पृष्ठ के अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

कला पक्ष - निराला जी के कई काव्यों मे प्रकृति की सुन्दरता का मनोहारी चित्रण है, इनकी रचनाए मुक्तक रचनाएँ भी है, इनके काव्यों मे रसों का वर्णन भी पाया जाता है, अलंकारो का भी प्रयोग देखने को मिलता है। शब्द गुण का भी इनके काव्यों मे समावेश है,

(iii) साहित्य मे स्थान - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला जी' का हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण योगदान है एवं महत्वपूर्ण स्थान है, इन्होने सर्वप्रथम छन्दो का बन्धन तोड़ा था, मुक्तक छंद के निर्माता भी कहलाते है, प्रयोगवादी रचनाए भी लिखी है, छायावाद के आधार स्तम्भ में से एक है। इनका हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है,

B
S
E

माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 17 का उत्तर

जीवन परिचय

जैनेन्द्र कुमार

दो रचनाएँ :- त्यागपत्र , कल्याणी , परख , अनाम स्वामी आदि।

भाषा - शैली :- जैनेन्द्र कुमार जी की भाषा सरल सहज एवं सुबोध है। आसानी से समझ मे आ जाती है, इनकी रचनाओं में तत्सम - तद्भव , देशी - विदेशी शब्द, मुहावरे - लोकोक्ति , शब्द - युग्म , शब्द शक्ति आदि का समावेश है। इनकी रचनाओं में विचारात्मक भावात्मक, चित्रात्मक, आलोचनात्मक , विवरणात्मक आदि शैली का प्रयोग किया गया है।

साहित्य में स्थान - जैनेन्द्र कुमार जी का हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनका हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान है। इन्हे मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के नाम से भी जाना जाता है।

BSE

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18 का उत्तर [अथवा]

पिता जी - तुम्हारी वार्षिक परीक्षा कब से है 1

पुत्र - पिता जी, 25 मार्च से है।

पिता जी - कैसी तैयारी कर रहे हो।

पुत्र - पिता जी, मैं तो रोज प्रत्येक विषय के 5 प्रश्न हल करता है। और उनको रोजाना दोहराता रहता है।

पिताजी - अच्छा, और यदि तुम्हे कुछ समझ नही आए, तो मुझसे चर्चा कर लेना, मैं भी तुम्हें समझा दूंगा।

पुत्र - ठीक है पिता जी।

पिता जी - और यदि तुम्हे कोई परेशान करे तो मुझे बताना, पढ़ने न दे तब भी मुझे बताना।

~~पुत्री~~ पुत्र - जी, पिता जी, बिल्कुल।

BSE

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक 'मानव श्रम' है,

(ii) विधाता की अनुपम रचना - 'मानव और उसका शरीर' को कहा गया है,

(iii) "दुर्लभ तन को यदि हम आलस्य , प्रमाद अथवा घटिया कामों मे गंवा देते हैं" तो यह विधाता के प्रति अन्याय है,

इस बात को विधाता के प्रति अन्याय कहा गया है,

B
S
E

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

BSE

प्रश्न क्र. २० का उत्तर

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह, भाग-2 मे संकलित कवितावली से लिया गया है, जिसके रचयिता / रचनाकार तुलसीदास है।

प्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश मे कवि तुलसीदास जी कह रहे है कि दुनिया उन्हें कई नाम दे रही है परन्तु उन्हे फर्क नहीं पड़ता। वे स्वयं को राम का गुलाम ही मानते है।

भावार्थ - कवि कह रहे है कि तुम मुझे धूत कहो, अवधूत कहो, या तुम (दुनिया) राजपूत कहो, या तो फिर कोई मुझे जुलाहा (मुस्लिम) कहे। मुझे इन बातो से कोई फर्क नही पड़ता। या फिर तुम मुझे किसी से विवाह कर लड़की की जाति को बिगाड़ने ~~कहे~~ का नाम दो, या त्यागा हुआ कहो, छोड़ा हुआ कहो, जाति के बिना वाला व्यक्ति कहो। मै तो स्वयं को राम का गुलाम ही मानता हू, मै तो राम का गुलाम ही हू, जिसे मुझे जो कहने मे रूचि है वह कहे

19 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 19 के अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मैं मन्दिर से माँग कर खा लूँगा, पेट भर लूँगा, और तो मैं मस्जिद मे जाकर सो जाऊगा, मुझे न तो किसी का एक लेना है, और न किसी को दो देना है,

विशेष - 1) भाषा - ब्रज है 2) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है 3) रस का प्रयोग किया गया है

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 मे संकलित 'पहलवान की ढोलक' से लिया गया है, जिसके लेखक 'फनीश्वर नाथ रेणु' है,

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश मे लेखक कह रहे है कि केवल पहलवान की ढोलक ही उस घोर रात्रि का सामना कर रही है, मृत गांव मे संजीवनी शक्ति का संचार पैदा कर रहीं है,

व्याख्या - रात के उस समय केवल पहलवान की ढोलक ही रात्रि की विभीषिका को ललकार सकती है, चो चुनौती देती रहती है, वह - (पहलवान की ढोलक) संध्या से सुबह तक बजती रहती है,

चाहे पहलवान जो भी विचार से बजाता हो, परन्तु पहलवान के ढोलक की आवाज उस अर्द्धमृत गाँव मे, औषधि - उपचार - पथ्य - विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति ही भरती रहती, सभी वर्ग के लोग बूढ़े - बच्चे, जवानो की उस शक्तिहीन आँखो के आगे उस दंगल का दृश्य सामने आ जाता। जिस शरीर मे शक्ति भी बची नहीं होती, उसमें मे ढोलक की आवाज़ के कारण बिजली दौड़ जाती थी।

B
S
E

विशेष - 1) लक्षणा शब्द - शक्ति का प्रयोग किया गया है।
2) शब्द - युग्म का प्रयोग किया गया है।
3) सरल - सहज एवं सुबोध भाषा मे गद्यांश लिखा गया है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर

प्रिय मित्र
प्रियंका,

नमस्कार। तुम कैसी हो? आशा है कि तुम अच्छी होगी। और अत्यधिक खुश भी। और मैं भी ठीक हूँ और तुम्हारी तरह अत्याधिक खुश भी। क्योंकि तुमने तो कमाल कर दिया। वाद - विवाद प्रतियोगिता मे प्रथम आ कर। तुम्हें बहुत - बहुत शुभकामनाए। तुम्हे ढेर सारी बधाईया कि तुमने प्रथम स्थान पाया। जब तुम मेरे गांव आओगी तब हम एक जश्न मनाएंगे तुम्हारी जीत का।

तुम्हारे पिता जी, माता जी को मेरा नमस्कार कहना।

तुम्हारी प्रिय मित्र

नेहा

B
S
E

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर

वर्तमान युग एवं इंटरनेट

प्रस्तावना -
इंटरनेट से लाभ
इंटरनेट से हानि
वर्तमान में इंटरनेट की उपयोगिता
उपसंहार

1) प्रस्तावना - आज का युग विज्ञान का युग है। वर्तमान में विज्ञान के बिना जीने की कल्पना भी नहीं की जाती / नहीं की जा सकती। वैसे ही वर्तमान में इंटरनेट के बिना जीने के बारे में सोच भी नहीं सकते। क्योंकि आजकल प्रत्येक काम में इंटरनेट की सहायता होती है। आजकल पैमेंट भी इंटरनेट की सहायता से होने लगा है। आजकल मनोरंजन का एक विशाल साधन इंटरनेट है। जहां इंटरनेट के लाभ है वहां इंटरनेट से हानि भी है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

2) इंटरनेट से लाभ - इंटरनेट सम्पर्क करने के लिए एक विशाल एवं सशक्त माध्यम है, हम भारत मे बैठे - बैठे अमेरिका, आस्ट्रेलिया जैसी दुर - से - दुर स्थानो पर सम्पर्क कर सकते है, ऑनलाइन इंटरनेट से शॉपिंग, फॉर्म जमा करना, टिकट बुक करना, पैमेंट ट्रांसफर करना आदि जैसे लाभकारी कार्य कर सकते है। इंटरनेट से हमारा मनोरंजन भी कर सकते है। पढ़ाई सम्बन्धित प्रश्न खोज सकते है, ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते है, घर बैठे रोजगार भी प्राप्त कर सकते है।

3) इंटरनेट से हानि - इंटरनेट जहां लाभकारी है, वहां हानिकारक भी है, जहां हम ऑनलाइन शॉपिंग कर सकते है वहां हमारे साथ धोके से पैसे भी लिए जा सकते है। ऑनलाइन पैमेंट मे कभी आपका पूरे खाते के पैसे भी सामने वाले के बैंक मे ट्रांसफर हो सकते है, ज्यादा इंटरनेट का उपयोग करने से हमारी आखों की परेशानी भी हो सकती है, ऐसे मे हमे इन्टरनेट से हानि भी होती है, इंटरनेट हमारे लिए घातक भी साबित हो सकता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

4) वर्तमान में ~~इंटरनेट~~ इंटरनेट की उपयोगिता - वर्तमान मे अक्सर कार्य इंटरनेट की सहायता से होते है, वर्तमान मे इंटरनेट का अत्यधिक महत्व है, पढ़ाई लिखाई, सामान खरीदना, सम्पर्क करना, पैसे ट्रांसफर करना, कॉलेज एवं स्कूल के फार्म जमा करना इत्यादि कार्य इंटरनेट की सहायता से होते है, और हमें इंटरनेट का सही उपयोग करना भी आना चाहिए।

5) उपसंहार - जैसा की आपने अभी पढ़ा की इंटरनेट वरदान भी है एवं अभिशाप भी है। यह आप पर निर्भर करता है कि आप इसका उपयोग कैसे करते है। आप ही अपना भविष्य बना सकते है एवं डूबा सकते है। फैसला आपका है।

B
S
E